REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 8 | MAY - 2018

'सन् 1975 ई. के बाद की मराठी की प्रमुख कवयित्रियों का काव्य'

शाहू साईनाथ गणपत

प्रस्तावना :

'भारत की लगभग सभी भाषाओंका साहित्य उपनिवेशवादी शिकंजे में ग्रस्त था। अंग्रेजी उपनिवेशवादी साहित्य के तत्वों को केंद्र में रखकर ही यहाँ का साहित्य लिखा जा रहाथा । 1960 के आसपास यूरोप तथा पूरे विश्व केसाहित्यविमर्श परिचित हो जानेपर साहित्य में परिवर्तन आने लगा। दुनियाभर में होनेवाली राजनितिक - सामाजिक - आर्थिक -सांस्कृतिक उथलपुथलने भारत केलेखक - आलोचक -पाठकों की धारणा ओंपर तथाअभिरुची परगहरा प्रभाव ड़ाला । पारंपरिक रचना ओंसे हटकर नई तथाआधुनिक परिकल्पनाओंसे, परिवर्तनशील विचारों से साहित्य का निर्माण होने लगा। अलग-अलग विचारधाराओंने साहित्य - विधाओं कोनया रुपप्रदान किया। रचनाकारों की विश्वदृष्टि में बदलाव आ गया, जीवनदृष्टि मेंबदलावआगया। रचनाकारऔर साहित्य केपाठकव्यक्तिऔर समाज कानयेसिरेसे विश्लेषणकरनेलगे।पहला दौर सामाजिक - संस्थाओंके,व्यवस्था केविद्रोह काआक्रामकतेवर धीरे - धीरे गंभीर चिंतनशीलता में परिवर्तित हुआ। साहित्य के भाषा - शैली, शिल्प , संरचना, रुप आदि सभी तत्वोंमें बदलाव आने लगाथा।इस व्यापक परिवर्तन के पीछे समाज की दलित - शोषित - जनजातीय (या आदिवासी) तथा स्त्री वर्ग की आत्मचेतना थी । इसी आत्मचेतना ने, अस्मिता की पहचाने दलित कविता, आदिवासी कविताऔर स्त्रीवादी कविता को जन्म दिया है।' [1] फलस्वरुप मराठी साहित्य कीकवितामें स्त्री चेतना उभरकरआयीहै।

मराठी साहित्य के विधाओं में कविता ही एक मात्र ऐसी विधा है जिसकी अखंड परंपरा है । कवियित्री की काव्य परंपरा में 'महदंबा' से प्रारंभ होती हुई मुक्ताबाई, जनाबाई, बहिणाबाई संत कवयित्रीयों ने लगातार विकास किया है । आधुनिक काल में काव्य परंपरा कों सावित्रीबाई फुले, लक्ष्मीबाई टिळक, मनोरमाबाई रानडे, इंदिरा संत, पद्मा गोळे, संजीवनी मराठे आदि कवयित्रियों का योगदान महत्वपूर्ण है। इसके उपरांत स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को लेकर काव्य-लेखन का दौर हि प्रारंभ हुआ। इस दौर की कवयित्रियों में प्रभागणोरकर, मल्लिकाअमरशेख, नीरजा, अश्विनी धोंगडे, अरुणा ढेरे, केकाव्यकाप्रस्तुत शोध आलेख में उल्लेख कियाहै।

'मुक्तछंद'और 'लंबी कविता' का प्रयोग करते हुए अपने अनुभव विश्व को सशक्तता के साथ अभिव्यक्त करनेवाली प्रभा गणोरकर का नाम प्रमुखतासे लिया जाता है । वह अपनी कवितामें लिखती है - -

'राजकन्येच्या बागेतल्या लिंबोणीचे वरचे लिंबू आपणच तोडायचे
असा त्याचा बेत असल्याने तो तातड़ीने तिकडे
चालत आला असावा, असे नंतर मोठयाई म्हणाली
तेंव्हा आम्ही खुप हसलो, मात्र त्या कहाणीत
पुढे काय झाले, ते नंतर कळले नाही '[2]

इस तरह कविता में एक कथा कही गयी है । आशयानुरुप अनुभव को सीधा छुने का सामर्थ्य प्रभा गणोरकर की कविता में है। अनुभवोंकी तटस्थता और प्रामाणिकता उनकी कविता की विशेषता हैं।'व्यतीत' और 'विवर्त' काव्य-संग्रह में प्रेमानुभवकी विविध छटाएँ चित्रित हुई हैं । उनकी कविता में चित्रित दु:ख अंतर्मुखी है यह अंतर्मुखता प्रेम की निराशा और दूरता से जन्मी है । स्त्री के खास अनुभव को व्यक्त करते - करते वह लिंग निरपेक्ष अनुभवभी व्यक्त करती है । स्त्री-धर्म के आदिम मूल्योंका अहसास उनकी कविता में दिखाई देता हैं। उनकी कवितामें चित्रित दु:ख प्रेमकी निराशा और दूरता के कारण निर्माण हुआ है। सफल प्रेमानुभव से असफल प्रेमानुभव रुपसे अभिव्यक्त हुआ है। प्रेममय जीवन में अचानक यह कटुता कहाँ से आई, इसे वह खोज नहीं पाती लेकिन उसका मन उदास हो उठा है। कभी - कभी इस उदासिनता का परिणाम झगड़े में परिवर्तित हो जाता है, मन उदास हो उठता है। अपना गुस्सा औरोंपर निकाला जाता है, बेटी को खाना नहीं,

पेड़ो को पानी नहीं, पितृसत्तात्मक समाज जीवन में स्त्री को हार स्वीकारनी पड़ती हैं। औरों पर गुस्सा निकाला जाने से वह पछताने लगती है और दु:खी होती है । स्त्री इन सबमेंसे रास्ता निकालती है --

'डोळ्यांना
हळू हळू अंधाराची सवय
करावी,
तसे मी स्वत:ला
शिकवित जाते आहे
तुझे माझ्या बरोबर नसणे'[3]

स्त्री को विधवा-जीवन शाप के समान लगता है, और सतीत्व के रुप में आनेवाली मृत्युको वह भाग्य समझती है। प्रभा गणोरकर की कविता में कवयित्री स्वयं सती होने जा रही है, यह कल्पनाकर सती का दु:ख, जीवितावस्था में मरते समय की यातना का चित्रण करती है ।

'बघ, तो विचित्र आवाज
सारखा तडतडणारा नगारा
कुणीतरी मला कुंकू लावले
ओवाळले ही का .....
कुणितरी माझ्या दंडांना धरलं
आणि माझी असहाय पावले
नुसती पुढे पडत गेली'[4]

प्रभा गणोरकर की कविता का अनुभव - संसार बहुत बड़ा है । उन्होंने अपने अनुभवोंको व्यक्त करनेके लिए पेड़ को प्रेरणा के ,रुप में स्वीकारा है। वह लिखती है --

'झाडे उगवत राहिली , बिया टाकत राहिली
पाहाता पाहाता एक प्रचंड रानाने तिला वेढुन घेतले
गगनचुंबी झाडांनी करकरुन आकाशाचा निळा तुकडाही
झाडून टाकला, त्याला ती शोधत राहिली'[5]

इस प्रकार उनकी कविता में चित्रित पेड़ जीवन का प्रतिक है । उनकी कवितामें व्यक्त अनुभव सीधे पाठकों तक पहुँचते हैं।विनाश और विकास जीवन के ये अटल सत्य पेड़ के माध्यम से व्यक्त कर दिखानेका प्रयत्न किया है। 'समिक्षकों के अनुसार मल्लिका अमर शेख यह मराठी की पहली स्त्रीवादी कवयित्री हैं। उनके 'वाळुचा प्रियकर' इस काव्य-संग्रह की कविताओं में पहलीबार स्त्री के अनंत दु:खोंको वाणी मिली है'।[6]स्त्रीत्व के नये अनुभव सशक्त रुप से मल्लिका की कविता में अभिव्यक्त हो उठे हैं, सुशील पगारिया और रजनी परुळेकर की कविता की तरह मल्लिका की कविता में स्त्री को पुरुष अधिक दु:ख देनेवाला दिखाई देता है। असफल प्रेमानुभव उनकी कविता में अधिक स्पष्ट व्यक्त हुए हैं। काफी देर तक प्रियकर की प्रतिक्षा करते रहना उसे पसंद नहीं प्रिय के याद से भड़क उठी स्त्री उनकी कविता में दिखाई देती है। फूलरुपी वाटिका की अपेक्षा करनेवाली विरहिणी के भाग्य में काँटें देखकर वह निराश होती है । मल्लिका की कविता में समझौता करनेवाली और बार-बार के समझौतेसे दु:खी स्त्री दिखती है। पिछले प्रेम को भूलनाभी संभव नही इसलिए उसके मन की अवस्था ऐसी हो जाती है --

'हातात सुई-दोरा आहे म्हणून
सगळं कायमचं शिवून टाकता येतं थोडचं ?
मी स्वत:ला उसवू लागले
तर ते ही जमेना'[7]

मल्लिका की कविता की स्त्री विद्रोही है। अन्याय के खिलाफ वह भड़क उठती है । और उनकी कविता में चित्रित स्त्री - शरीर, स्त्री - जीवन और स्त्री - विषयक अनुभव स्पष्ट रुपसे दिखाई देते हैं। रुढी-परंपराओंसे मुक्त एक मानव के रुप में स्त्री को देखना चाहती है --

'हरीण डोळ्यांनी बघत असलेलं आमचं आयुष्य
किती दिवस करायची साठमारी
अशी स्वत:च्याच रक्ताची
मला हे पाहायचं नाहियं
आणि मला हे संपवायचं सगळं'[8]

स्वातंत्र्योत्तर कालमें जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ। जीवन अधिक गतिमान, संघर्षमय और तनावमुक्त बनता गया । स्त्री जीवनमें भी विविध परिवर्तन हुए । इस बदलते स्त्री भावविश्व का चित्रण कवयित्री नीरजा ने 'निरन्वय' और 'वेणा' में किया है। 'नीरजा के निरन्वय में स्त्री के विशेष दु:खों की अभिव्यक्ति हुई है'। [9]और अंग्रेजी साहित्यका प्रभाव भी दिखाई देता है। 'प्रतीक्षा' जैसी एक - आध कविता छोड़ दी जाये तो भावनामय होनेके लिए नकार देनेवाली यह कवयित्री हैं। नीरजा स्त्री की पारंपारिक भूमिका नकारनेवाली और प्रेम के विविध रुपों को अपनी कविता में व्यक्त कराती है । वेणा में चित्रित प्रेमानुभव इस प्रकार अभिव्यक्त हुये है ।

'तुझ्या ओठाच्या पाकळ्या
माझ्या अंगातुन
तेंव्हा माझ्या प्रत्येक श्वासाने
गायली अगणित गाणी
तुझ्या नावाची'[10]

जीवन के अनेक अनुभव, प्रतिक्रियाएँ केवल स्त्री-पुरुष संबंध तक मर्यादित नहीं, तो समाज, संस्कृति, मानव जीवन और साहित्य आदि की व्यापक चर्चा इसमें हैं । स्त्रीवादी विचारोंके अनुभव अत्यंत गहरे हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्री आदर्श के जो मूल्य बनाए गए हैं , वे मूल्य न होकर स्त्री स्वतंत्र्यता पर प्रहार करनेवाले हथियार हैं। स्त्री के स्वतंत्र विचार और विकास के आड़ की बेडियाँ है, इस लिए नीरजा की कविता इन मूल्यों और आदर्शो की होली करती है ।

'माझ्या संस्कृतिने
नजर केलेले स्त्रीत्वाचे आदर्श
जेंव्हा मी पेटवले शब्दांनी
तेंव्हा सार्या पवित्रता
पेटून उठल्या'[11]

इसके उपरांत स्त्रीवादी कवयित्री के रुप में अश्विनी धोंगडे का नाम उल्लेखनीय है। 'स्त्रीसूक्त' और 'अन्वय' काव्यसंग्रहोमें प्रेमानुभव से अधिक स्त्रीवादी विचार प्रमुख रुपसे व्यक्त हुए हैं। स्त्री के घुटन को मुखर करनाही 'स्त्रीसूक्त'का महत्वपुर्ण लक्ष्य हैं। उनकी कविता में सफल और असफल प्रेम का चित्रण हुआ हैं । इस चित्रण में प्रेम क्रीड़ा, प्रेममय रिश्ते में उलझन, टूटे हुए अहसास ऐसे कुछ इने-गिने भाव दिखाई देते हैं। प्रेम मे हार-जीत होती नहीं ऐसा कहते ही जाने-पहचाने चेहरे एकही घर में रहते हुए भी मन से एक दूसरे से काफी दूर हो जाते हैं । एक दूसरे की समझ लेनेकी समझदारी उस समय समाप्त हो जाती है उनकी कविता की प्रियसी कहती है ।

'माझ्या घराचे प्रवेशव्दार
उंच तुझ्या व्यक्तिमत्वाइतके
तुझी उंची दरक्षणी
दारापेक्षा वाढणारी'[12]

साथही कवयत्री ने अपनी कविताओं में विधवाके दु:खमय जीवन का चित्रण भी किया है । 'दोन मुलांची आई' कविता में अभिव्यक्त करती है ।

'तशी तिला दोन मुले आहेत
दोघे ही भाग्यवान आहेत .....
प्रायव्हसीची कल्पना आहे
याची (कधी मधी) आठवण आहे
अधून - मधून तिला साडी घेवून
आपले कर्तव्य पार पाडले आहे'[13]

पति के निधन के बाद विधवा स्त्री पर घर और बच्चोंकी जिम्मेदारी पडती हैं और आगे पढ़े-लिखे लड़के और बहु के लिए यह विधवा बुढ़ी बोझ बन जाती है केवल कर्तव्य समझकर देखभाल करनेवाले लडके है, यही उस माँ का दुःख है । उसे जो प्रेम, अपनत्व चाहीए वह नहीं मिलता यह स्पष्ट दिखाई देता है ।

पत्नी, माँ, दाई आदि विविध भुमिका निभाते समय उसके लिए कोई शेष नहीं रहता । हर एक की जरुरत पूरी करते समय वह एक 'मिनी कंम्प्युटर' लगने लगती है । नौकरी से आनेके बाद घरके लिए कष्ट सहनेवाली वह होटल के वेटर से अलग कोई नहीं रहती । उसका मूड रहे या न रहे उसे सबके लिए प्रसन्न रहना ही पड़ता है । 'गृहिणी' कवितामें कवयित्री इस प्रकार रेखांकित करती है ।

'तीचा मूड असो वा नसो
भोंग्याच्या खांबासारखी ती असते
मध्यावर ती असते हक्काची सर्वांच्या
पण तिच्या हक्क नसतो कोणावर'[14]

स्त्री का अकेलापन एक अलग पध्दती से चित्रित करने का प्रयत्न कवयित्री अश्विनी धोंगडे की कविता में दिखाई देता है ।

मराठी कवयित्रीयोंके काव्य विकास में कवयित्री अरुणा ढेरे का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मराठी के प्रमुख समीक्षक रा.ग.जाधव कहते है --'शब्द का आशय, छंद रचना, गीत के संदर्भमें अरुणा ढेरे की प्रयोगशील दृष्टि उल्लेखनीय सिध्द होती है । प्रयोगशीलता के लिए पोषक - मनन, चिंतन, शब्द - शक्ति , काव्यत्व, रचनात्मक - दृष्टि आदि बातें अरुणा ढेरेने आत्मसात की हैं। आत्मविश्लेषण की दृष्टि भी उनमें है। मराठी काव्य-परंपराका रसिक विश्लेषणात्मक ज्ञानभी उनके पास है उनकी कविता कलके मानुषी कविता के सर्वांगीण प्रयोगशीलता का विश्वास देनेवाली कविता है '।[15]

स्त्री और उसका भाव-जीवन अरुणा ढेरे के काव्य का केंद्र बिंदु है । छोटे बच्चे से लेकर बडे प्रेम में नहाकर निकले हुए प्रेमिकाओं तक अनेक स्त्रियाँ उनकी कविता में मिलती हैं । कवयित्री प्रियकर और प्रेयसी के प्रेमानुभव के कोमल अनुबंध को सहज चित्रित करनेमें सफल हुई है । एक दूसरे में गुँथना, असमय में न मिलने के लिए कहना, छोटे-बड़े बातों पर रुठना, और फिरभी मिलनके लिए आकुल हो उठनेवाला मन चित्रित हुआ है। प्रियकर का स्वभाव ज्ञात होने के बावजूद भी कटू बोलने से दुःखी हो उठी स्त्री कहती है --

'सारे जरि कळते रे सहज मला कळते
नारी ही तुझ्या एखाद्या शब्दाने, स्पर्शाने
एखाद्या करण्याने
जिवापास दुखतेरे, फार फार दुखते'[16]

सन् 1975 ई. के बाद की मराठी की प्रमुख कवयित्रियों में रजनी परुळेकर, अनुराधा पाटील, आसावरी काकडे, सुमती लांडे, ज्योती लांजेवार, प्रज्ञा लोखंडे, अनुराधा पोतदार, सुशील पगारिया आदी कवयित्रीयों के काव्य का उल्लेख किया जाता है ।

उपर्युक्त कवयित्रियों के काव्य के अध्ययन से निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि काव्य में स्त्री जीवन का चित्रण, प्रेमानुभव, परिवार, रीश्ते-नाते, नौकरी-व्यवसाय, समाज, स्त्री के अस्तित्व और प्रश्नों, समस्याओं का चित्रण किया है । प्रभा गणोरकर की कविताओं मे स्त्री-कविता और मल्लिका अमरशेख, अश्विनी धोंगडे की कविताओं में स्त्रीवादी कविता का रुप दिखाई देता है ।

संदर्भ : -

1. कविता : स्वरुप और विवेचन - सं.प्रा. निशिकांत ठकार, पृ.सं. 57
2. विवर्त - प्रभा गणोरकर, पृ.सं. 80

3. वही, पृ.सं. 06
4. व्यतीत - प्रभा गणोरकर, पृ.सं. 64
5. विवर्त - प्रभा गणोरकर, पृ.सं. 19
6. प्रादेशिक भाषा और साहित्येतिहास - डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, पृ.सं. 206
7. वाळूचा प्रियकर - मल्लिका अमर शेख, पृ.सं. 206
8. वही, पृ.सं. 55
9. प्रादेशिक भाषा और साहित्येतिहास - डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, पृ.सं. 206
10. वेणी - ले. नीरजा, पृ.सं.70
11 वही, पृ.सं.28
12 अन्वय, ले. अश्विनी धोंगडे, पृ.सं.30
13 स्त्रीसूक्त - ले. अश्विनी धोंगडे, पृ.सं.29
14 वही, पृ.सं.31
15 आधुनिक मराठी कवयित्रींच्या कविता - रा.ग.जाधव, पृ.सं.128
16. मंत्राक्षर - अरुणा ढेरे, पृ.सं.15